कवचुआह रोपुठे वरिासत स्थल

चर्चा में क्यों?

हाल ही में वैज्ञानिकों द्वारा जलवायु परविर्तन और मौसम की वषिम परस्थितिओं को देखते हुए वश्वि में पानी के लयि बढ़ते संघर्षों को कम करने हेतु मज़िोरम की एक खोई हुई सभ्यता को अपनाने की बात कही गई है जो चट्टानों को छपि हुए जलाशयों में बदल कर वषिम स्थतियों में जल संरक्षण में महत्त्वपूर्ण हो सकती है।

प्रमुख बदि

- वर्ष 2016 में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India-ASI) द्वारा म्याँमार की सीमा से सटे मज़िोरम के चम्फाई (Champhai) ज़लि के एक गांव वांगछयिा (Vangchhia) में एक 'लविगि हस्ट्री मयूज़यिम (Living History Museum)' की खोज की गई। जसि कवचुआह रोपुठे वरिासत स्थल (Kawtchhuah Ropuithe Heritage Site) नाम दयिा गया।
- कवचुआह रोपुठे वरिासत स्थल भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के संरक्षति स्मारकों के अंतर्गत मज़िोरम की पहली साइट है। जो यहाँ के स्थानीय लोगों द्वारा कई पीढ़यिों से पूजनीय है।
- आइज़ॉल से 260 कमिी. की दूरी पर स्थति यह साइट लगभग 45 वर्ग कमिी. क्षेत्रफल में वसि्तृत है, जसिमें बड़े पत्थर के स्लैब, मेनहरि (Menhirs - बड़े और खड़े पत्थर) और एक नेक्रोपोलसि (Necropolis - एक बड़ा कब्रसि्तान) तथा कलाकृतयिों के बीच में चति्रति चति्रलेख मलि हैं।
- यह क्षेत्र नचिले हमिालय का हस्सिा है और इसमें हल्के भूरे व काले रंग के वभिनि्न प्रकार के बलुआ पत्थरों की पहाड़यिों की कतारें हैं।

जल संग्रहण की संभावति कला

- ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन समय में वांगछयिा के लोगों ने अपनी बस्ती के लयि इन चट्टानों पर नक्काशी की थी। मुख्य खुदाई वाली जगह पर ऐसे 15 इलाके प्राप्त हुए हैं।

//

- पुरातत्त्ववदिों द्वारा की गई सबसे महत्त्वपूर्ण खोजों में यहाँ पाए गए पत्थरों के बीच पानी के पैवेलयिन (पत्थरों को काट कर बनाए गए एक फीट से लेकर एक मीटर तक के छेद) हैं, जो कई बलुआ पत्थर की ढलानों पर फैले हुए हैं।
- ASI के शोधकर्त्ताओं ने बताया कि ग्रे सैंडस्टोन (Grey Sandstone) छद्रिों के लयि उपयुक्त होती है, जबकि कठोर काली चट्टान (Black Rock) का उपयोग मेन्हरिों के लयि कयिा जाता है।
- शोधकर्त्ताओं द्वारा वगित वर्षों में वांगछयिा साइट पर कयि गए अध्ययन के अनुसार, यह क्रयािवधिि कई शताब्दयिों पहले सद्धि की गई जल संचयन हेतु साधारण वज्ञिान प्रतीत हो रही है जसि स्थानीय आबादी कम-से-कम एक वर्ष तक इस्तेमाल कर सकती है।
- सबसे उल्लेखनीय वषिय यह है कि कैसे उन लोगों द्वारा बारशि के पानी को ढलान से बहते हुए यहाँ चट्टानों में रोक दयिा गया है, ताकि चट्टानों के अंदर पानी जमा हो सके।
- अभी तक पुरातत्त्ववदि वांगछयिा बस्ती के बारे में सही-सही पता नहीं लगा पाए हैं क्योंकि तीन साल पहले जब इस जगह की खुदाई की गई तो यहाँ मलि खंडहरों को 15वीं शताब्दी के होने का अनुमान लगाया गया। बाद में बीरबल साहनी संस्थान ने इसे 6वीं शताब्दी का बताया।

नष्किर्ष

- अभी हाल ही में ASI की टीम द्वारा पहले के अनुत्तरति प्रश्नों के जवाब के तलाश में वांगछयिा के पास नवपाषाण गुफाओं की खोज की गई जो यह दर्शाती है कि यह खोई हुई सभ्यता और भी अधकि पुरानी हो सकती है।
- मज़िोरम चैप्टर ऑफ इंडयिन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरटिज (Mizoram Chapter of Indian National Trust for Art and Cultural Heritage (INTACH) के संयोजक ने बताया कि ये पुरातात्वकि अवशेष वांगछयिा या चम्फाई ज़लि तक ही सीमति नहीं हैं बल्कि कम-से-कम चार और प्रमुख साइटें हैं - फ़ार्कन, डुंग्ट्लंग, लयािनपुई और लुनघुनयािन। जहाँ अब तक सैकड़ों मेनहरि और चत्रिलेखों के साथ बड़े पैमाने पर खुदाई की जा रही है जो कि एक भुला दएि गए अतीत की कहानयिों को बताते हैं।

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण
(Archaeological Survey of India-ASI)

- संस्कृति मंत्रालय के अधीन यह राष्ट्र की सांस्कृतकि वरिासतों के पुरातत्त्वीय अनुसंधान तथा संरक्षण के लयि एक प्रमुख संगठन है।
- इसका मुख्य कार्य राष्ट्रीय महत्त्व के प्राचीन स्मारकों तथा स्थलों और भग्नावशेषों का रख-रखाव करना है।
- प्राचीन स्मारक और पुरातात्त्वकि अधनियिम,1958 के प्रावधान ASI का मार्गदर्शन करते हैं।
- पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति अधनियिम, 1972 द्वारा ASI अपने कामकाज को दशिा देता है।
- ASI राष्ट्रीय महत्त्व के प्रमुख पुरातात्त्वकि स्थलों की बेहतर देखभाल के लयि संपूर्ण देश को 24 मंडलों में बाँटता है।

स्रोत – द हदिू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/ancient-art-of-holding-water-in-rocks